Date ___/___/___

मानव भूगोल: उसका विभाजन एवं अन्तर्सम्बन्ध

मानव भूगोल एक ओर जहाँ भौतिक भूगोल की भाँति अजैविक नहीं है तो दूसरी ओर उसमे इतनी बहुरूपी जटिलताएँ एवं विभिन्न स्तरो का अन्तर्सम्बन्ध एवं संग्रन्थन पाया जाता है। इतना आवश्यक की भौतिक भूगोल की विभिन्न इकाइयो की भाँति मानव भूगोल को भी अनेक उप इकाइयों में उप विभाजित करने का सफलतापूर्वक प्रयास अवश्यक किया गया ऐसा उपविभाजन मानवीय क्रियाओं के निरन्तर विकासित एवं गतिशील बने रहने से कुछ समय मे अधुरा जान पड़ता है। मानव भूगोल की आर्थिक राजनीतिक सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन बस्ती एवं नगरीय भूगोल आदि मानव भूगोल कि विकासित स्वरूप का ही आज परिणाम है। स्वयं भूगोल यूरोप रूस एवं अमेरीकी महाद्वीप मे एक इतिहास का विषय बन चुका है आज आर्थिक भूगोल की स्थान संसाधन भूगोल ने ले लिया है। यह सब विकसित स्वरूप के देन है। जटिलताओं की व्याख्या करने वाले भूगोल की उपयुक्त शाखाएँ एक दूसरे से निकटतम से सम्बन्धित है। उदाहरणार्थ यातायात माध्यम उत्पादन एवं उपभोग के लिए कच्चा एवं निर्मित माल ढोने के कारण आर्थिक भूगोल का अंग है। इसी प्रकार संसार की विभिन्न संस्कृतियो से सम्बन्धित चिन्तन की यातायात एवं संचार के साधन समझने का महत्वपूर्ण साधन माना जाता है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

हार्टशोर्न ने लिखा है। यदि हम ऐसे समाकलित क्षेत्र के विकास की भी कल्पना करते हैं। तो हमें यह मान लेना चाहिए कि उत्पादन के अनेक पक्ष हैं। कृषि उत्पादन का सम्बन्ध मिट्टी तथा जलवायु से खनिज उत्पादन का सम्बन्ध खनिज निक्षेप से तथा उद्योग का वहाँ के स्थानिक सम्बन्धों से है। अध्ययन की भाँति विषय के प्रमुख तत्वों मृदा विज्ञान खनिज विज्ञान औद्योगिक संगठन आदि विषयों का समान्य भौगोलिक (प्राकृतिक एवं मानवीय) परिवेश के साथ साथ विशिष्ट अध्ययन या शोध आवश्यक हो जाते हैं।

क्षेत्रों का अध्ययन एवं भौतिक बनाम मानव भूगोल

वर्तमान में भूगोल में क्षेत्रों का अध्ययन कम्पेज मिल्यू लेण्डशैफ्ट दृश्य भूमि या लैण्डस्केप आदि नामों से महत्वपूर्ण बनाता जा रहा है। भौतिक एवं मानव भूगोल के द्वैधता के सन्दर्भ में क्षेत्रों का अध्ययन विशेष स्थान रखता है। जहाँ काण्ट, रिटर, हम्बोल्ट, रिचथोफन आदि ने पृथ्वी की एकता को महत्वपूर्ण माना व जैविक बनाम अजैविक मानव बनाम गैरमानव भौतिक बनाम मानव आदि नामों से विभाजित करने का प्रयास किया तत्काल इसका सभी स्तरों पर मैकिण्डर ब्लाश, रिचथोफन हरबर्टसन हेटनर स्टाम्प एवं

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date __/__/__

कार्ल सावर आदि विद्वानो द्वारा अपने अपने विशिष्ट चिन्तन द्वारा रचनात्मक एवं तर्कसंगत विरोध किया गया।

आधुनिक युग मे प्रदेशो मे भी निम्न स्तर पर क्षेत्रो एवं स्थानो विविधता रूपी लक्षणो उनकी गतिशीलता एवं विकसित स्वरूपो तथा यहा की तत्व जटिलताओं का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण हो गया। अतः ऐसे क्षेत्रो का अध्ययन बहुत सावधानी से एवं अनुभव से ही किया जाना चाहिए आज चाहे विशाल महाद्वीप का देश का राष्ट्र का प्रदेश का या क्षेत्र का अध्ययन करना हो उसे अध्ययन की विषय सूची मे ऐसे भौतिक तत्वो जैसे स्थिति भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि धरातल एवं संरचना जलवायु वनस्पति एवं जीव जगत ढाल एवं प्रवाह व्यवस्था जलाशय खनिज एवं अन्य प्राकृतिक संसाधन विकसित पर्यावरण स्थिति आदि का एक उसके साथ साथ दूसरी ओर मानव द्वारा परिवेश के सामंजस्य काल मे विकसित अथवा निरन्तर नव निर्मित तत्वो जैसे - विभिन्न प्रकार के मार्ग व उनके स्टेशन बस्तियाँ आर्थिक क्रियाएँ एवं व्यवस्थाएँ उनके निरन्तर गतिशील स्वरूप महान नगरीय इकाइयों अनेक प्रकार की मानव विकास से उत्पन्न समस्याएँ आदि का समावेश करना होता है।

इतना आवश्यक है कि क्षेत्र अध्ययन मे विशेष द्वारा निर्धारित विशिष्टता एवं क्षेत्रो की प्रकृति के अनुसार ही कोई उपयोग विधि का निर्धारण करना —

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date ___/___/___

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है।
19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध मे चिशोल्म ने एवं
20 वी. सदी के पुर्वार्द्ध मे एल. डी. स्टाम्प
एवं अन्य प्रादेशिक भूगोलवेताओं ने देशी या
राजनीतिक सीमाओं के अधार पर वर्णन प्रस्तुत
करते समय ऐसे अध्ययन मे इसी प्रकार की
प्रायः समरुपी व्यवस्था बनाए रखी
ऐसे अध्ययन से ही वह क्षेत्रों के सही सही
स्वरूप को समझ सकता है। ऐसे आगमनिक
विधि हेतु विद्वानो ने परम्परागत अध्ययन विधि
के अध्ययन ही तीन स्तरो मे विभाजन किया है।

① भूतल के अजैव लक्षण —
इसमें सामान्य भौतिक भूगोल के तत्वों
को लिया जा सकता है।
जैसे— स्थिति धरातल मिट्टी, जलवायु
संरचना एवं खनिज आदि इसमे सम्मिलित
किये जाते है। जो एक दुसरे के समाबंधित होकर
अजैविक स्वरुपो की जटिलता का निर्माण करते

② भूतल के जैविक लक्षण — सभी प्रकार
के जीव संसार के
तत्व विशेष रूप से अन्तर्सम्बंधित होकर
विकसित होते है। यह भूतल के अजैव लक्षणों
से ये भौतिक परिवेश पुर्णतया प्रभावित रहते है
अब सकल पर्यावरणीय सन्तुलन इकोतन्त्र एवं
उसकी विकृति की समस्या के अध्ययन को भी
होते जा रहे है। अवश्यकता के अनुसार न सिर्फ
जैव संसार को प्रभावित ही किया नयी नसले

प्राचार्य 17/9/20
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया